भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि एवं किसान कल्याण विभाग
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 4364
19 अगस्त, 2025 को उत्तरार्थ

बीटी कपास को अपनाने का प्रभाव

4364. श्री दिनेश चंद्र यादवः
श्री गिरिधारी यादवः

क्या कृषि और किसान कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या यह सच है कि दस वर्ष पूर्व हमारे देश से कपास का निर्यात होता था और अब हम कपास का आयात कर रहे हैं;

(ख) क्या यह सच है कि पारंपरिक कपास के बजाय बीटी कपास अपनाने के बाद से हमारे देश की कपास के लिए अन्य देशों पर निर्भरता बढ़ गई है; और

(ग) यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और इसके क्या कारण हैं?

उत्तर
कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री (श्री रामनाथ ठाकुर)

(क) से (ग) : आयात और निर्यात घरेलू कपास आपूर्ति और वस्त्र उद्योग की आवश्यकताओं के बीच असंतुलन को दूर करने के लिए एक संतुलन तंत्र का हिस्सा हैं, जो वैश्विक वस्त्र बाजार के भीतर काम करता है।

पिछले 10 वर्षों के दौरान, भारत में कपास का औसत आयात लगभग 20 लाख गांठ रहा है, जो देश के औसत कपास उत्पादन का लगभग 6% है। अधिकांश आयात या तो विशिष्ट कपास (गीज़ा, सुपीमा जैसी ईएलएस किस्में, मूल्यवर्धित वस्त्र उत्पादन के लिए ऑस्ट्रेलियाई कपास) की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किया जाता है, या ब्रांडों वाले उद्योग द्वारा बैक-टू-बैक व्यवस्था के लिए किया जाता है।

कपड़ा मंत्रालय के भारतीय कपास निगम के अनुसार, कपास सीजन 2014-15 के दौरान कपास का उत्पादन 386 लाख गांठ, खपत 309.44 लाख गांठ, आयात 14.39 लाख गांठ और निर्यात 57.72 लाख गांठ हुआ था, जबकि कपास सीजन 2024-25 में कपास का उत्पादन 294.25 लाख गांठ, खपत 318 लाख गांठ, आयात 25 लाख गांठ और निर्यात 18 लाख गांठ होने का अनुमान है। यह दर्शाता है कि कपास सीजन 2024-25 में घरेलू खपत उत्पादन से अधिक हो गई है, जो आयात में वृद्धि और भारत से कपास के कम निर्यात के कारणों में से एक है।

इस मंत्रालय के पास ऐसा कोई ठोस आंकड़ा उपलब्ध नहीं है जो यह दर्शाता हो कि बीटी कपास को अपनाने से देश की आयातित कपास पर निर्भरता बढ़ी है।

*****